

समकालीन महिला उपन्यासों में आर्थिक पहलुओं की अभिव्यक्ति

डॉ. वाई. वेकटलक्ष्मी

हिंदी अध्यापिका, शासकीय महाविद्यालय, पलासा।

समकालीन भारतीय महिला लेखिकाओं ने महिलाओं के अनुभवों को साहित्य में व्यक्त करने के साथ-साथ समाज में मौजूद राजनीतिक और आर्थिक असमानताओं को भी उजागर किया है। इस संदर्भ में मन्नू भंडारी, महाश्वेता देवी, प्रभा खेतान, ममता कालिया, मृदुला गर्ग, गीतांजलि श्री जैसी लेखिकाओं की रचनाएँ अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती हैं। इनके उपन्यासों में महिलाओं की आर्थिक स्वायत्तता की आकांक्षा, कार्यस्थलों पर होने वाली असमानता, शहरीकरण से उत्पन्न नई संभावनाएँ तथा वर्ग आधारित आर्थिक शोषण जैसे विषयों का विस्तृत चित्रण मिलता है। साथ ही, जाति और वर्ग के संबंध, राजनीतिक जागरूकता, सामाजिक आंदोलनों में महिलाओं की भागीदारी और स्थापित सत्ता संरचनाओं के विरुद्ध प्रतिरोध जैसे मुद्दों को भी प्रमुखता से प्रस्तुत किया गया है। ये लेखिकाएँ यह दर्शाती हैं कि राजनीतिक और आर्थिक संघर्ष एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं, और महिलाओं के समग्र सशक्तिकरण के लिए दोनों क्षेत्रों में समान रूप से प्रगति आवश्यक है। उनकी रचनाएँ महिलाओं के आत्मबोध, स्वतंत्रता की भावना और सामाजिक पुनर्गठन की प्रक्रिया को स्पष्ट रूप से सामने लाती हैं। निबंध के अनुसार, ये कृतियाँ केवल अनुभवों का वर्णन ही नहीं करतीं, बल्कि वैचारिक परिवर्तन का माध्यम भी बनती हैं। इस प्रकार समकालीन महिला साहित्य एक सामाजिक दस्तावेज के रूप में विकसित हो रहा है और समाज में परिवर्तन की चेतना को जन्म दे रहा है। इस अध्ययन का उद्देश्य महिला लेखन की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक गहराइयों को समझना है।

भारतीय साहित्य में महिला लेखन का इतिहास अत्यंत व्यापक और विविधतापूर्ण रहा है। विशेष रूप से आधुनिक महिला लेखिकाओं ने अपने लेखन के माध्यम से सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक प्रश्नों को नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है। उनके साहित्य में महिलाओं की चेतना, संघर्ष, आकांक्षाएँ और सामाजिक-सांस्कृतिक स्थिति स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आती हैं। आधुनिक महिला लेखन ने समाज के विभिन्न आयामों, विशेषकर राजनीतिक और आर्थिक पक्षों की ओर ध्यान आकर्षित किया है। पहले जहाँ महिलाओं के साहित्य को केवल भावनात्मक और निजी अनुभवों तक सीमित समझा जाता था, वहीं अब यह लेखन महिलाओं के जीवन की व्यापकता और उनके सामाजिक संघर्षों को भी उजागर करता है। महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता, श्रम का मूल्य, श्रमिक वर्ग की स्थिति, वैश्वीकरण के प्रभाव और पूंजीवादी व्यवस्था में महिलाओं की स्थिति जैसे विषयों ने आर्थिक दृष्टिकोण से आधुनिक महिला लेखकों का ध्यान आकर्षित किया है। उदाहरण के लिए, मन्नू भंडारी, महाश्वेता देवी, प्रभा खेतान, मृदुला गर्ग, गीतांजलि श्री और मनीषा कुलश्रेष्ठ जैसी लेखिकाओं ने अपनी रचनाओं में महिलाओं के आर्थिक शोषण, पारिवारिक और सामाजिक दायित्वों में उनकी भूमिका और स्वतंत्रता की उनकी चाहत को बारीकी से चित्रित किया है। अपने अनुभवों के माध्यम से, उन्होंने आर्थिक असमानताओं और महिलाओं की आजीविका से जुड़े मुद्दों की ओर ध्यान आकर्षित किया है, साथ ही उस व्यवस्था को भी चुनौती दी है जो महिलाओं की आर्थिक निर्भरता को बनाए रखती है। राजनीतिक दृष्टिकोण से, महिलाओं की राजनीतिक चेतना, सत्ता की गतिशीलता में उनकी भागीदारी, जाति और वर्ग की राजनीति में उनकी भूमिका और सामाजिक आंदोलनों में उनकी भागीदारी, सभी को समकालीन महिला लेखकों की रचनाओं में विस्तार से संबोधित किया गया है। आदिवासी महिलाओं की राजनीतिक सक्रियता, उनके भूमि अधिकारों की रक्षा और प्रशासनिक शोषण के विरुद्ध उनकी लड़ाई, महाश्वेता देवी के लेखन में राजनीतिक विमर्श के सशक्त उदाहरण हैं। प्रभा खेतान के उपन्यासों में स्त्री चेतना और पितृसत्तात्मक सत्ता संरचना के बीच इसी तरह के संघर्षों को चित्रित किया गया है। व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर चर्चा के अलावा, समकालीन महिला साहित्य अक्सर सामाजिक और संस्थागत ढाँचों को चुनौती देता है।

आज भारतीय समाज में, राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियाँ आपस में घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई हैं। इनमें से प्रत्येक क्षेत्र में महिलाएँ कई स्तरों पर प्रभावित होती हैं, और उन्हें अक्सर दोहरे शोषण का सामना करना पड़ता है, लिंग आधारित भेदभाव और जाति या वर्ग आधारित पूर्वाग्रह। इस दृष्टिकोण के अनुसार, महिला उपन्यासकारों की रचनाएँ केवल कहानियाँ नहीं हैं, वे सामाजिक वास्तविकताओं का प्रतिबिंब हैं जो पाठकों को चिंतन करने और प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। यह अध्ययन आधुनिक महिला लेखकों की रचनाओं में मौजूद राजनीतिक और आर्थिक तत्वों को समझने का प्रयास करता है। इससे यह पता चलेगा कि ये लेखिकाएँ अपने पात्रों का उपयोग पूंजीवादी व्यवस्था, श्रम बाजार, सामाजिक असमानताओं, सत्ता की गतिशीलता और राजनीतिक संघर्षों को चित्रित करने के लिए कैसे करती हैं। महिला साहित्य में विकसित हो रही राजनीतिक और आर्थिक चेतना तथा उसके माध्यम से समाज में महिलाओं की स्थिति किस प्रकार प्रभावित और निर्मित होती

है, इसका भी इस अध्ययन में विश्लेषण किया जाएगा। यह शोध इस प्रश्न पर भी विचार करने का प्रयास करता है कि आधुनिक महिला लेखिकाओं का लेखन केवल व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित है या वह एक व्यापक वैचारिक अभिव्यक्ति को भी सामने लाता है। साथ ही यह भी देखा जाएगा कि इन रचनाओं में स्त्री-स्वर केवल पीड़ा और संघर्ष तक सीमित है या उसमें प्रतिरोध, आत्मविश्वास और सामाजिक परिवर्तन की आकांक्षा भी व्यक्त होती है। इस प्रकार यह अध्ययन समाजशास्त्रीय, राजनीतिक तथा नारीवादी दृष्टिकोणों को ध्यान में रखते हुए महिला लेखन को नए और व्यापक परिप्रेक्ष्य में समझने का प्रयास करता है।

आधुनिक महिला लेखिकाओं की रचनाएँ केवल आत्मकथात्मक अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे समाज की व्यापक वास्तविकताओं को उजागर करने वाले महत्वपूर्ण सामाजिक दस्तावेज भी हैं। इन कृतियों के माध्यम से राजनीतिक और आर्थिक संरचनाओं को समझने तथा उनकी नई व्याख्या करने की संभावनाएँ सामने आती हैं। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय साहित्य में महिला लेखन केवल भावनात्मक अभिव्यक्ति नहीं रहा, बल्कि वह सामाजिक परिवर्तन की एक सशक्त आवाज के रूप में विकसित हुआ है। आधुनिक महिला साहित्य से यह स्पष्ट होता है कि महिलाओं में आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करने की प्रबल इच्छा दिखाई देती है। आज की महिला केवल पारिवारिक जिम्मेदारियों तक सीमित नहीं रहना चाहती, बल्कि स्वतंत्र रूप से अपनी पहचान स्थापित करने की आकांक्षा रखती है। आपका बंटी की नायिका, जिसे आपका बंटी मन्नु भंडारी ने चित्रित किया है, तलाक के बाद स्वयं को स्थापित करने की कोशिश करती है और इस प्रकार महिलाओं की आत्मनिर्भरता की भावना का प्रतिनिधित्व करती है। इसी प्रकार ममता कालिया के उपन्यासों में महिला पात्र अपने पेशे और जीवन से जुड़े निर्णय स्वयं लेने का साहस दिखाती हैं। वहीं मृदुला गर्ग की नायिकाएँ पारंपरिक रूढ़ियों को चुनौती देते हुए स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ती हैं। इन रचनाओं में आर्थिक स्वतंत्रता केवल आजीविका का साधन नहीं, बल्कि आत्मसम्मान और सामाजिक पहचान का आधार बनकर उभरती है। यह प्रवृत्ति पितृसत्तात्मक समाज की पारंपरिक धारणाओं को भी चुनौती देती है। इन उपन्यासों में महिलाओं को अपनी शिक्षा, क्षमता और परिश्रम के बल पर सशक्त होते हुए दिखाया गया है। उनके संघर्षों में आत्मविश्वास और जागरूकता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। आर्थिक स्वतंत्रता उन्हें जीवन में नई दिशा देने के साथ-साथ रिश्तों में समानता और निर्णय लेने की क्षमता भी प्रदान करती है।

समकालीन महिला लेखिकाओं ने कार्यस्थल पर महिलाओं के सामने आने वाली समस्याओं को संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है। उपन्यासों में महिला पात्रों को रोजगार प्राप्त करने और उसे बनाए रखने के लिए लैंगिक भेदभाव, पारिवारिक विरोध और सामाजिक अवरोधों से संघर्ष करते हुए दिखाया गया है। कार्यस्थल पर उपेक्षा, तुच्छ समझा जाना और पुरुष सहकर्मियों द्वारा शोषण जैसे मुद्दे विशेष रूप से ममता कालिया की रचनाओं में प्रमुखता से दिखाई देते हैं। वेतन असमानता, पदोन्नति में भेदभाव और असुरक्षा की भावना महिलाओं के मानसिक तनाव का कारण बनते हैं। इन कठिन परिस्थितियों के बावजूद महिला पात्र व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष करती रहती हैं। यह संघर्ष केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सम्मानजनक जीवन के अधिकार से भी जुड़ा हुआ है। कई रचनाओं में कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न जैसे गंभीर विषयों को भी स्पष्ट रूप से उठाया गया है। इन उपन्यासों का मूल संदेश यही है कि महिलाओं को समान अवसर और सुरक्षित कार्यस्थल मिलना चाहिए। इस प्रकार समकालीन महिला साहित्य कार्यस्थल पर लैंगिक भेदभाव के विरुद्ध सशक्त प्रतिरोध की भावना को भी प्रकट करता है।

आधुनिक महिला लेखन ने महिलाओं के जीवन के अनेक आयामों को सामने लाकर समाज को एक नया और व्यापक दृष्टिकोण प्रदान किया है। यह साहित्य केवल महिलाओं की पीड़ा का वर्णन नहीं करता, बल्कि उनकी चेतना, संघर्षशीलता और परिवर्तन की आकांक्षा को भी प्रभावी रूप से अभिव्यक्त करता है। इस प्रकार महिला लेखन आज एक ऐसे सशक्त सामाजिक दस्तावेज के रूप में उभरा है, जो महिलाओं के अनुभवों, चुनौतियों और उनके सामाजिक परिवर्तन के प्रयासों को दर्ज करता है। समकालीन लेखिकाओं की रचनाओं में महिलाएँ अब केवल पारंपरिक अर्थों में “नायिका” के रूप में प्रस्तुत नहीं होतीं, बल्कि वे विचारशील और जागरूक व्यक्तित्व के रूप में सामने आती हैं। उदाहरण के लिए मन्नु भंडारी, ममता कालिया, मृदुला गर्ग जैसी लेखिकाओं के उपन्यासों में महिला पात्र सामाजिक संरचनाओं, शक्ति-संतुलन और लैंगिक असमानताओं पर गंभीर प्रश्न उठाती दिखाई देती हैं। वे आर्थिक शोषण और सामाजिक अन्याय के प्रति जागरूकता पैदा करती हैं तथा समानता, स्वतंत्रता और न्याय पर आधारित समाज की कल्पना भी प्रस्तुत करती हैं। इस प्रकार आधुनिक महिला साहित्य केवल कथा-वर्णन तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह सामाजिक चेतना को जागृत करने, स्थापित धारणाओं को चुनौती देने और एक अधिक न्यायपूर्ण तथा समतामूलक भविष्य की दिशा में विचार करने का महत्वपूर्ण माध्यम बन जाता है।

सहायक ग्रन्थ :

1. नारी: दशा और दिशा - डॉ. चन्द्रभान
2. मन्नु भंडारी का कथा साहित्य - डॉ. राधे श्याम
3. स्त्री एवं सामाजिक प्रसंग (ममता कालिया का कथा साहित्य - पीटर शागि